Publication : Jann Satta Express
Edition : Lucknow
Date :3/5/07 Page No.3

पूर्व सैनिकों व उनकी विधवाओं को रोजगार से जोड़ने की पहल

वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ। देश की सीमाओं की रक्षा करने वालों के भविष्य की रक्षा का जिम्मा प्रोजेक्ट हीलिंग टच के जरिये शुरू किया गया है। इस परियोजना को नाम दिया गया है 'मिशन विजय-2'। इस परियोजना के तहत अब तक 1420 पूर्व सैनिकों व उनके परिवारजनों को रोजगार मिल चुका है। भविष्य में इस परियोजना का लाभ बीएसएफ, सीएसआईएफ, सीआरपीएफ और असम रायफल के जवानों को भी दिया जाएगा। इस परियोजना को संचालित करने वालों की योजना है कि अगले पांच से दस साल के भीतर उत्तर प्रदेश की हर तहसील में कम से कम एक पूर्व सैनिक का रोजगार शुरू हो जाए।

प्रोजेक्ट हीलिंग टच के चेयरमैन मुकेश आनन्द ने आज होटल कम्फर्ट इन में संवाददाताओं को बताया कि करगिल युद्ध के दौरान वीर सेनानियों के सम्मान में जो अलख पैदा हुई थी उसने उनके मन में यह प्रेरणा पैदा की कि सीमा पर जान न्यौछावर करने वालों के परिवारजनों और युद्ध के दौरान अपंग हो जाने वालों की जीविका के लिए व्यवस्था की जाए। इस व्यवस्था को संचालित करने के लिए सबसे पहले पेप्सी कम्पनी ने साथ देने की बात कही। उसने कुछ पूर्व सैनिकों को अपनी कम्पनी की एजेन्सी वरीयता के आधार पर देने का वादा किया। उन्होंने बताया कि इस परियोजना पर मेहनत शुरू की तो 15 दिसम्बर 2000 को पहली बार एक पूर्व सैनिक को रोजगार मिला। अब तक चौदह सौ बीस पूर्व सैनिकों को इस परियोजना के तहत रोजगार मिल चुका है। इस प्रोजेक्ट को अगले पांच से दस साल के भीतर उत्तर प्रदेश की हर तहसील तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने बताया कि मिशन विजय-2 में सैनिक की विधवा को वीर नारी से सम्बोधित किया जाता है। व्यवस्था यह है कि सैनिक की विधवा के भाई को रोजगार दिलाया जाता है। शर्त यह है कि उसके पास पचास हजार रुपये हों और वह कम से कम हाई स्कूल तक पढ़ा हो। अपंग सैनिकों और सैनिक की विधवाओं को पेप्सी, हीरो हाण्डा, अपोलो टायर आदि की एजेन्सी दिलायी जाती है।

मिशन विजय-2

मुकेश आनन्द ने बताया कि एक सैनिक की विधवा श्रीमती पुष्पम झा ने खुद हीरो हाण्डा एजेन्सी के लिए आवेदन किया तो उन्हें एजेन्सी दिला दी गयी। भागलपुर (बिहार) में वह सफलतापूर्वक एजेन्सी का संचालन कर रही हैं। इसी तरह से व्हील चेयर पर चलने वाले एक ब्रिगेडियर को 57 साल की उम्र में हीरो हाण्डा की एजेन्सी दिलायी गयी। एक और अपंग सैनिक एपी सिंह बोकारो में कम्प्यूटर का बिजनेस करते हैं। उन्होंने बताया कि सैनिकों को रिटायरमेन्ट के समय मिलने वाली राशि में से दो लाख रुपये लगाकर रोजगार शुरू करने के लिए प्रेरित किया जाता है। सैनिकों के बीच जाकर उन्हें प्रेरित किया जाता है कि अपने भविष्य के लिए वह किसी न किसी रोजगार से जुड़ें। इलेक्ट्रोलक्स, कैल्विनेटर और कायनेटिक आदि कम्पनियों से सम्पर्क साधा गया है कि हम पैसा लगाएंगे लेकिन डीलरशिप पूर्व सैनिकों को दे दी जाए। बीस कम्पनियां इसके लिए तैयार हो गयी हैं।